बिल्ली विश्वविद्यालय

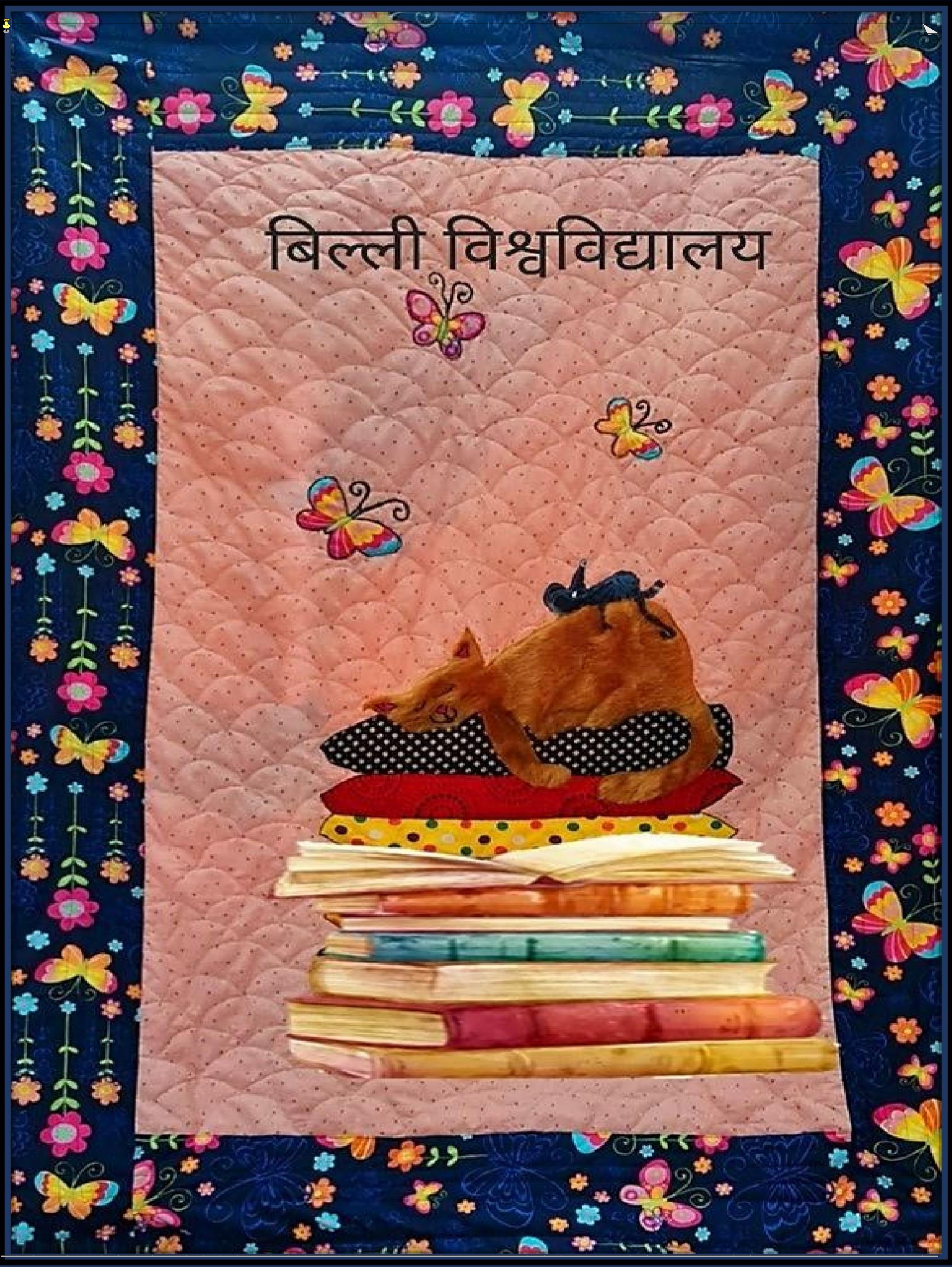

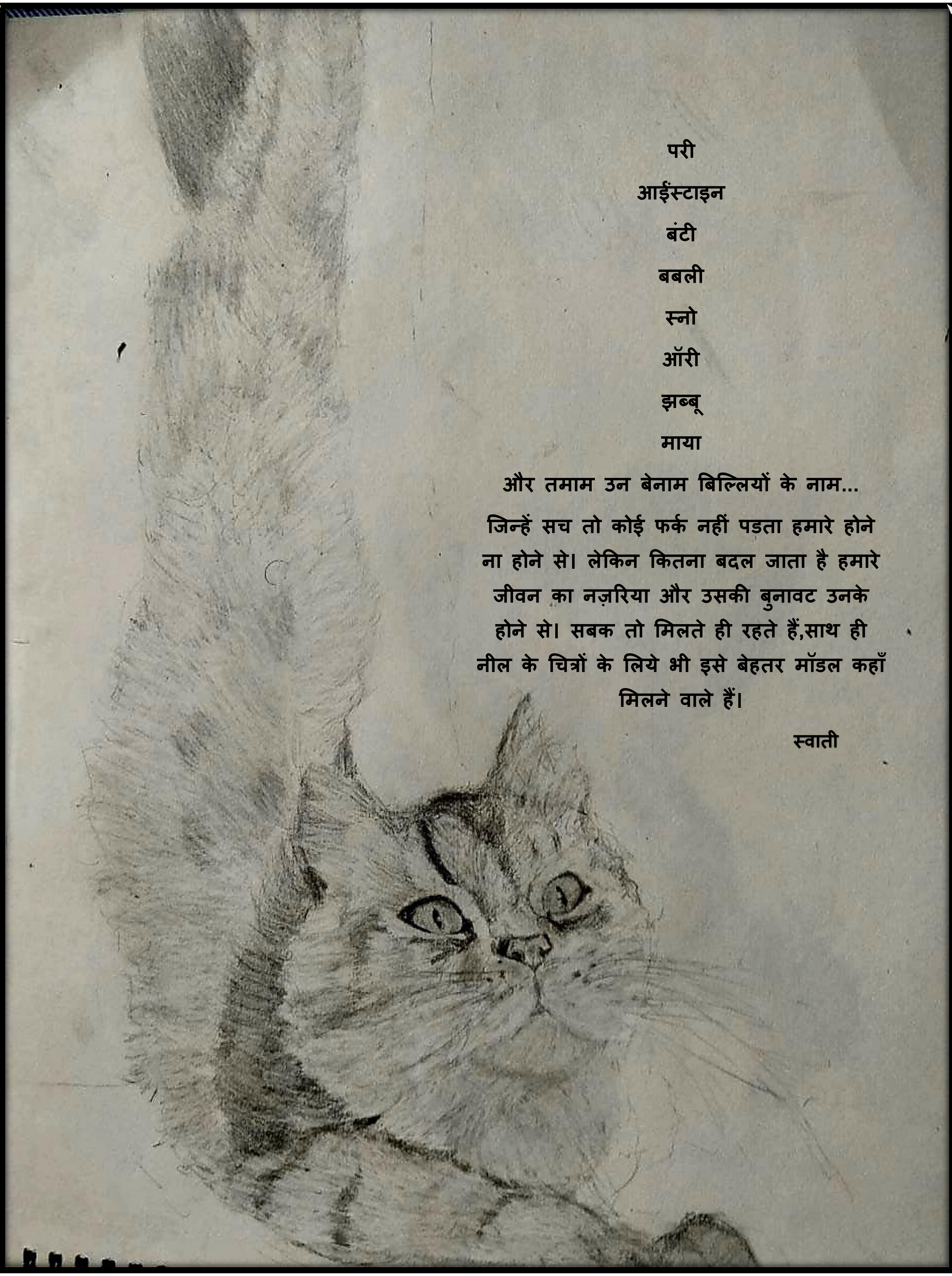

परी

आईंस्टाइन

बंटी

बबली

स्नो

ऑरी

झब्बू

माया

और तमाम उन बेनाम बिल्लियों के नाम...

जिन्हें सच तो कोई फर्क नहीं पडता हमारे होने ना होने से। लेकिन कितना बदल जाता है हमारे जीवन का नज़रिया और उसकी बुनावट उनके होने से। सबक तो मिलते ही रहते हैं,साथ ही नील के चित्रों के लिये भी इसे बेहतर मॉडल कहाँ मिलने वाले हैं।

स्वाती

(1)

कितनी देर देख रही हूँ।
वो बैठी है समाधिस्थ
बंद आंखों से देखती।

होती है कहीं कोई
हल्की सी हलचल,
कभी कोई अदृश्य
सरसराहट..
कान एक नाज़ुक
सा इशारा करते हैं
उस ओर,
बताने के लिए
कि वो पूरी तरह
सतर्क है
हर पल, हर क्षण।

किसी निपुण योग गुरू सी
वो सोई भी नहीं है,
खयालों में खोई भी नहीं है,
बस योगनिद्रा में है।
वो मौजूद है भी इस क्षण में,
और नहीं भी है।
बस देखते रहिए उसकी तरफ
अपने आप मिलते रहेंगे सबक
एक पल भी ज़ाया नहीं है
बिल्ली की सोहबत में!

(2)

जंगल सफारी में घंटों
जीप में बैठ शेर का इंतजार
करना तपस्या करने जैसा है।
यदि वो प्रसन्न हो जाए
तो हो जाते हैं दर्शन।
पर शेर दिखे या ना दिखे,
कहानियाँ तो बन हो जाती हैं।
कैसे वो उठा,कैसे बैठा,
और कैसे उसने
पार किया रास्ता।
या फिर हर जगह थे
उसके कदमों के निशां लेकिन
मुलाकात न होने पाई।
ये कहानियाँ जब बड़ा
रस ले कर दोहराई
जा रही होती हैं, तब
वहीं बगल में सोफे के
दूसरे कोने में,एक
असंभव से कोण में
शरीर को मरोड़ कर
करवट बदल कर
सो जाती है एक बिल्ली।
हजारों बार आपने उसे
देखा होता है,

पर हर बार की तरह
इस बार भी
जंगल के शेर को भूल कर
आप फोन निकालते हैं
और....
सामने अजीबो गरीब
तरीके से बदन मरोड़
कर सोती बिल्ली
के फोटो खींचने का
मोह नहीं छोड़ पाते।
हर शेर एक कहानी है
और ..हर बिल्ली एक कविता!

(3)

सुबह उठते ही उसने पहले
पूँछ फुला कर मुझसे
लाड़ करवाया।
खुश हो कर सारे घर का
दौड़ कर चक्कर लगाया।
अलग-अलग आसनों में
बदन तानते हुए फिर
खाने की तरफ मोर्चा घुमाया।

खाना खा कर
जीभ चटकारते हुए
बड़ी एकाग्रता से
उसने पहले अपने नाखूनों
की धार तेज़ की।

फिर किसी सौंदर्य विशेषज्ञ
की कुशलता से
अपनी कंघी जैसी
खुरदुरी जीभ से
पूँछ से लेकर मूँछ तक
शरीर का हर एक अवयव
बड़ी दक्षता से सँवारा।

फिर गमले की पीछे
ठंडी हरी छाँह में
एक आरामदायक
कोना खोज कर
लंबी तान दी।
अब वो तभी उठेगी
जब उसकी नींद खुलेगी।

बड़े आदर से उसका ये सारा
अनुष्ठान देखती मैं सोच रही हूँ
कि आखरी बार कब मैंने
खुद पर इस तरह
ध्यान दिया था?
अपने उस शरीर से
जिसके होने से मैं हूँ
इतना एकरूप हो कर,
मानों मेरे सिवा दुनियाँ
में दुसरा कोई ना हो ,
इस तरह प्यार किया था?

(4)

झब्बू बिल्कुल नहीं सुनता।

ज़रा भी नहीं।

अक्सर तो वो इसलिए नहीं सुनता
कि वो कोई कुत्ता नहीं है।
कभी इसलिए नहीं सुनता
क्योंकि वो बिल्ली है।
कभी उसका मन नहीं होता।

और कभी कभी उसका
मन होता भी है
पर वो इसलिए नहीं सुनता
कि वो नहीं चाहता
कि किसी को ये गलतफहमी
हो जाए कि वो सुनता है।

सोचती हूँ कभी तो ऐसा
कर सकने की हिम्मत जुटाऊँ।
अनसुनी कर दूँ सारी पुकारें
या फिर साफ ना कह दूँ ।
लेकिन उसके लिए
बहुत पीछे जाना होगा।

वो जो अच्छे बच्चे
सबकी बात सुनते हैं
वाला सबक खून में
घुल चुका है, पहले तो
उसे भुलाना होगा।
पर उसके बाद भी
मैं ,हाँ जी अभी आई
कहती दौड़ पड़ूँगी,
क्योंकि बिल्लीपन
के साथ जो अकेलापन है
उसका बोझ उठा पाना
हर इंसान के
बस की बात नहीं।

(5)

अक्सर देखा है मैंने
सामने किसी बिजली के तार पर,
या खिड़की की मुंडेर पर बैठे
कबूतर को अपलक तकती बिल्ली को।
उस समय किसी महान योगी सी
वो इतनी एकाग्रता से
कबूतर समाधि में लीन होती है
कि सारे संसार में सिर्फ
वो और कबूतर बस,
इतना ही बाकी रह जाता है।
ये भी देखा है मैंने
कि उसकी इस तपस्या का
कुछ ऐसा असर होता है
कि कभी कभी कबूतर
सम्मोहित सा खुद ही
उसके पास खिंचा चला आता है।
वो रहती है तैयार,तत्पर
इस क्षण के लिए।
जो भी है...
बस यही इक पल है।
बिना किसी हिचकिचाहट
पलक झपकने से पहले
लपक लेती है उसे।
अचूक निशाना, कातिल पकड़।

दूसरे मौके की रईसी
ना शिकारी के पास है
न शिकार के पास।

(6)

ऑरी बहुत कम बोलती है।
ऐसा नहीं कि वो बोल नहीं सकती।
ऐसा भी नहीं कि उसके पास कोई
भावना ही नहीं है प्रकट करने के
लिए।
लेकिन ज़ुबान का इस्तेमाल वह
तभी करती है जब और कई चारा न
हो।
अक्सर तो उसकी पूँछ ही कह देती है
उसके मन की बात बड़ी कुशलता से।

पूँछ की अपनी एक भाषा है।
जब किसी झंडे सी पूँछ हवा में
लहराती है तो मानो ऐलान करती है
कि माबदौलत खुश हैं।
हुकुम है कि थोड़ा सहलाया जाए।
आप मारे खुशी के रुकने का
नाम ही न लें, तो ना ना कहता
दाएं बाएं हिल कर पहले
आगाह करता है वो झबरीला झंडा।

उस पर भी जो आप ना समझें
तो एक आध तमाचा, दो चार नाखून
आपकी बेवकूफी की कीमत हैं।

उसे दोष मत दीजिए,
पूँछ पर ध्यान रखिए।

वह किसी पत्थर की मूरत सी
स्थिर है , लेकिन पूँछ थरथरा
रही है उत्तेजना से,
ज़रूर सामने शिकार है
आप भी चुप रहिए।
अक्सर पास आ कर वो
बैठ जाती है बड़े खानदानी अंदाज़ से
पल्लू की तरह पूँछ समेट कर ।
बेहद निश्चिंत है वो अभी
आप पर भरोसा है उसे।

कितने स्पष्ट इशारे, इतनी साफ भाषा
जो आप ना समझें, तो वो
आपकी समस्या है।
खामोशी उसकी मजबूरी नहीं
समझदारी है,
कि वो
इंसान नहीं बिल्ली है।

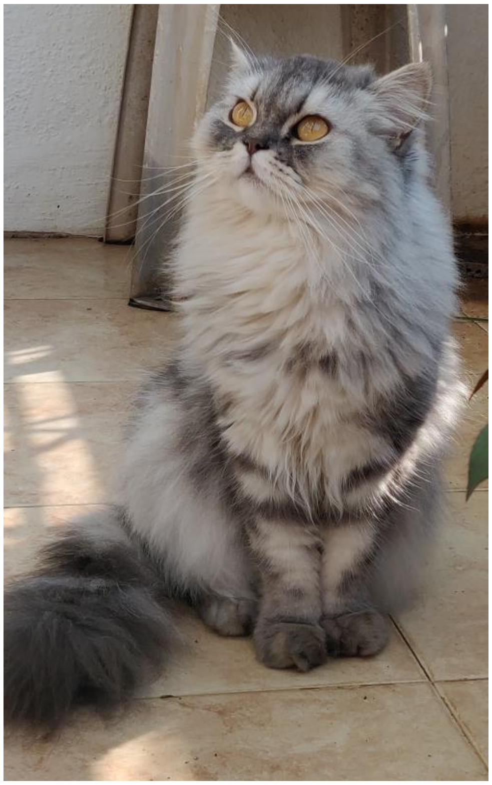

(7)

झंडे सी तनी है ऊपर को
या दाएँ -बाएँ हिलती है
हौले हौले लहराती है
हर हलचल कुछ तो कहती है

हल्का सा इशारा पूँछ का ही
हर बात बयाँ कर जाता है
ऑरी को हमारी बोलने की
थोड़ी भी जरूरत लगती नहीं।

लगता है देख के बिल्ली को
है शायर ने ये बात कही
है इल्म की इब्तिदा हंगामा
इंतिहा ए इल्म है ख़ामोशी ।

(इल्म -knowledge, enlightenment
इब्तिदा -शुरुवात
इंतिहा -अंत)

(8)

(कुछ सवाल आइंस्टाईन से)

तुम्हे एक ही ज़िंदगी में मिलते हैं नौ मौके
या अलग अलग नौ बार दुनियाँ में आते हो।
बार बार वहीं लौट कर आते हो या फिर
हर बार नए घर, नए लोग आज़माते हो।

जाने कितने राज़ हैं तुम बिल्ली जात के
सदियों से कैसे तुम उन्हें छिपाते हो?
हम तो इतना भी न जान पाए कभी कभी
तुम यूँ ही कुछ देर गायब कैसे हो जाते हो?

तुम्हारा हमारी ज़िंदगी में आना और फिर चले जाना,
इत्तिफाक था या तुमने खुद तय किया था?
क्या वो तुम्हारी आखरी, नौवीं ज़िंदगी थी
जो तुमने हमेशा के लिये अलविदा कह दिया था?

(9)

सोफे पे, गद्दे पर,
कुर्सी के ऊपर और
टेबल के नीचे
कपड़ों पे चिपके और
पर्दों से लटके,
प्याजों की डलिया में
गमलों में, बगिया में
हर लम्हा झड़ते
हवाओं में उड़ते
घर के हर कोने में
बाल पड़े हैं।
मुश्किल हटाना है
दुनियाँ भर के झाड़ू
कोशिशें कर कर के
थक कर पड़े हैं।
और उन बालों के
जितनी ही
यादें भी फैली हैं
घर भर में जैसे
खुशबू बसी सी हैं।
उतना ही मुश्किल है
उनका भी जाना
हमारे दिलों से कि
हमारे ये झबरे,
चार पांव वाले बच्चे ,
जो एक बार आ जाएं
तो फिर रह जाते हैं
हमेशा के लिए।
फिर वो पास हों, ना हो
दिल में ही रहते हैं
और हर याद ले आती है
एक मुस्कान चेहरों पे।

(10)

यूँ ही ब्रश उठा कर
पहाडों को पीला रंग दूँ
गेरूआ रंग दूँ घाँस को और
आसमान सुनहरा कर दूँ।
पैरों तले रख दूँ आँधियाँ
या समुंदर को छत कर लूँ।
बालों में फूलों कि तरह
चाँद और सूरज लगा लूँ
या फिर दोपहर का
आँचल सितारों से भर दूँ।

जब कुदरत कर सकती है
झब्बू की एक आँख नीली
और दूसरी सुनहरी,तो
मेरी कल्पनाओं को
जाने किस हकीकत
की रस्सी जकड़े है!

(11)

क्या लिखूँ...

चाहती हूँ कोई
बहुत खूबसूरत बात लिखूँ
नदी लिखूँ पहाड़ लिखूँ,
सारी कायनात लिखूँ ।
बिल्ली की बड़ी बड़ी
बिल्लौरी आँखों से
झाँकता है जो अब भी,
सदियों से खोए उस
जंगल की बात लिखूँ।
बिल्ली के पाँवों से
मेरे भी उसके भी
सपने में आता है,
छप्पर की चाहत में
जो पीछे छूट गया ,
धमनी में फिर भी जो
धड़कन सा बजता है ,
रूहों में फिर भी जो
साए सा रहता है ,
उस अनंत अंबर की
तारों वाली रात लिखूँ ।

(12)

कभी ऐसा हुआ नहीं कि
बीमार पड़ा घर में कोई
और बिल्ली ने आ कर
उसका हाल पूछा नहीं।

सिरहाने बैठ कर
बाकायदा परेशान
होती हैं बिल्लियाँ!

बिल्ली का प्रेम
छतरी सा है।
कड़ी धूप हो या
हो धूँआधार बारिश,
ज़रूरत हो, तो
छाते सा तन जाता है।
बचाता है,सहारा देता है।

लेकिन उन बेवकूफों का
इलाज बिल्ली के पास नहीं
जो खुशगवार मौसम में भी
छाते की छाँव से बाहर
निकलना ना चाहें।

उसका प्रेम तो आज़ाद
करता है और आज़ाद
रहना जानता है।
वो कभी उलझन नहीं है
आपकी राह में।
ना बेड़ी हैं आप
उसके पाँव में।

अक्सर सोचती हूँ कि
रूमी से ले कर
जिब्रान तक सभी,
बिल्ली विश्वविद्यालय के
छात्र रहे हैं कभी ना कभी।

(13)

<u>शेर की मौसी</u>

शहद से भरी प्यालियों सी
बड़ी बड़ी खूबसूरत आँखे
नर्म मखमल सा बदन
मासूम चेहरा।
ईश्वर की बनाई सबसे
खूबसूरत रचना
बड़े शाही अंदाज मे
आपके सामने है।
आप खुद को रोक नाहीं पाते।
हाथ बढा कर छू लेते हैं
उठा कर भींच लेना
चाहते हैं गोद में।
आप नजरअंदाज कर रहे हैं
इशारे, उसकी ना ना कहती
पूंछ या हल्के से हिलती मूंछ के।

और पलक झपकते ही
निकल आती हैं तलवारें म्यानों से।
नुकीले धारदार नाखून झपट के
खून रिसती खरोंचे छोड़
गायब हो जाते हैं क्षणार्ध में।
आपकी गुस्ताखी की सजा
तुरंत दी जाती है।
वहीं के वहीं।

आप नाराज हैं कि
आप तो बस प्यार
करना चाहते थे।
पर क्या आपने ये जानने की
कोशिश की,
कि वो क्या चाहती है?

उसके अलावा भी
आप दो बातें भूल गए...

पहली तो ये कि वो आपका
खिलौना या आपकी गली की
कोई मासूम लड़की नहीं
शेर की मौसी है,
और दूसरा उससे भी ज्यादा
जरूरी आप ये भूल गए
कि उसके यहां
ना का मतलब
बस ना ही होता है।

(14)

ये बिल्लियाँ ना जाने दुनियाँ
के किस कोने से, जाने कब
इस देश में लाई गईं।
यहीं जन्मी, पली, बढ़ीं,
पीढ़ियों रहीं इंसानी घरों में।
इन्होंने देखा ही नहीं
जंगल, मैदान,
खुला आकाश!
लेकिन पेड़ दिखते ही
जाने कैसे जान लेती हैं
कि कैसे चढ़ना है।
रोज कटोरे में
परोसा हुआ कैट फूड
खाने वाली बिल्लियाँ
दिन में कई बार,
करती हैं नाखूनों पे धार,
और मुंडेर पर बैठे
पंछी का,कर लेती हैं
पलक झपकते शिकार।
तब अहसास होता है
कि नैसर्गिक प्रवृत्तियाँ
गहरे कहीं रची बसी हैं
उनके गुणसूत्रों में,
जिन्होंने उठा रखी है
जिम्मेदारी उनके
बिल्लीपन की।

कहते हैं कि गुफाओं में
रहने वाले मेरे आदि पुरखे
बहुत अलग थे मुझसे!

छोटी सी टेकडी पर
दस कदम चल कर,
धूप से बेज़ार मैं
हाँफती खड़ी सोचती हूँ
कि मेरी नैसर्गिक प्रवृतियों
की पोटली कहाँ,कब,कैसे और
क्यों खो दी मेरे गुणसूत्रों ने ???

(15)

एक फूँक जादू की ..
सतरंगी सपनों से
हवाओं के पंख लगा
चारों ओर उड़ने लगे
बुलबुले साबुन के।

बिल्लियाँ बौराई सी
पकड़ने को दौड़ पड़ीं
पर फट से फूट गए
हवाओं के गुब्बारे,
घुल गए हवाओं में
और मानो जादू हो
यूँ गायब हो गए
जैसे कभी थे ही नहीं।

उतनी ही जान थी
उतने से लम्हों की।
साबुन के बुलबुले का
जितना हो सकता था,
उतना सा ही था
बस उनका विस्तार।

बिल्लियाँ भी मुँह मोड़
नर्म गर्म कोना देख
कुछ ऐसे सो गईं,
जैसे कुछ हुआ ही नहीं।
जैसे कुछ था ही नहीं।

बस पीछे छूट गया
एक अदृश्य खालीपन
जैसे कुछ खोया हो,
और ज़रा सा गीलापन
जैसे कोई रोया हो।

(16)

ये खंडहर किसी ज़माने में
आलीशान महल था,
जो फलां धर्म के अमुक राजा ने
फलां सदी में अपनी फलां
रानी के लिए बनवाया था।
और फलां आक्रमणकारी ने
अमुक सदी में फलाना वजह से
इस बरबाद किया था।
गाईड अपनी तरफ से
पूरी कोशिश कर रहा था
समझाने की, लेकिन
उसकी किस्सागोई में
वो मज़ा नहीं आ रहा था।
तभी एक बिल्ली आलस
देती पास आ कर बैठ गई।
यहाँ कब से हो तुम, मैनें पूछा।
यहीं उस दीवार की दरार में
पैदा हुई थी, उसने कहा।
ओ इस महान देश के
महान खंडहरों की बिल्ली
तुम ही बतलाओ क्या
जानती हो इन प्राचीन
इमारतों के बारे में।
मेरे हाथों से पीठ रगड़ते हुए
वो बोली बस ज़रा लाड़
करवाने का मन था।
जो तुमसे हो सके तो
ज़रा कान के पीछे खुजा दो,
तो जा कर आराम से सो जाऊँ।
जो तुम्हें इन मुर्दा कहानियों में
मुझसे अधिक रस हो
तो कह दो, काले, गोरे, भूरे
हर तरह के सैलानी हैं यहाँ
किसी दूसरे के पास चली जाऊँ।
उसे सहलाते हुए मैंने भी
पत्रकारों वाले अंदाज़ में
पूछ ही लिया, "फिर भी,
आपको क्या लगता है?"
हाथ-पाँव,पीठ मरोडते हुए
उसने खुद को ताना।
वो जो वहाँ कमान दिख रही है न
उसके नीचे आज
एक मोटे चूहे का शिकार किया है।
जम के पेट भरा है।
और जो सामने वाला खंबा है न
उसकी छाँव में बढ़िया नींद आती है।
बस यही तो सबसे ज़रूरी बातें है।
क्या फर्क पड़ता किसने कब
क्या बनवाया और किसने क्यों तुड़वाया।
बस इतना ही समझ में आता है
हम बिल्ली लोग को
कि नींद अच्छी आती है
जो पेट भरा हो।

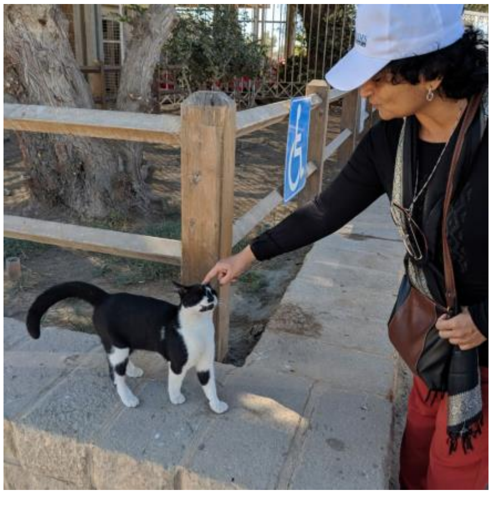

(17)

एक साज़ बिल्लियाना

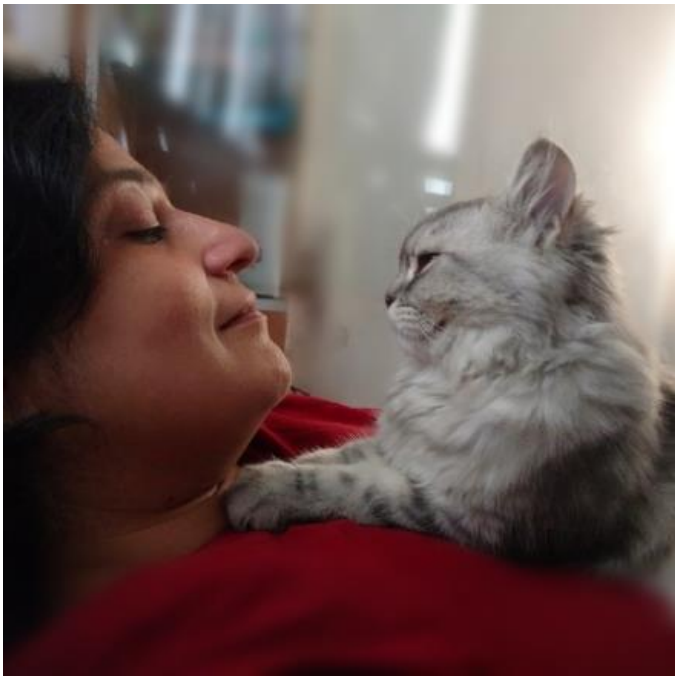

घुरघुराना, पर्र पर्राना
ऐसे नीरस शब्द
उस घटना को व्यक्त करने
में पूरी तरह नाकाम हैं
जब बिल्ली आपके सिरहाने
आ कर आपके ही तकिए
पर सर रख दे,
या फिर आपके सीने पर
संतुलित कर खुद को
आँखे बन्द कर ले।

या जब आप कोई किताब
ले हाथ में सोफे पर पसरे हों
तब आपको कुछ सरकने
पर मजबूर कर
अपनी जगह बनाए

और फिर तसल्ली से
आधी मूंद ले आँखे और
आप से टिक कर सो जाए।

और फिर आप महसूस करें
उस स्पंदन को ...
मानों उसकी धमनियों के संगीत पर
शरीर का कण कण थिरक रहा हो।
वह कुछ पल जब आप पर
कर के पूरा भरोसा ,
एक सुखी संतुष्ट बिल्ली
पूरी की पूरी किसी
अदभुत बिल्लियाना
साज़ की तरह बजने लगे।

कुछ नाम देना चाहती हूँ
उन स्वर लहरियों को
जो किसी धम्मचक्र सी
बिना मुंह खोले
उसके कंठ से निकलती है
और आपका मन मानो
सराबोर हो जाता है
शांत रस से।

फिर सोचती हूँ कि
बेहतर यही होगा कि
हम उसे कोई नाम ना दें।

सिर्फ अहसास है वो,
रूह से महसूस करें।